लागू होने के बाद स्थिति इससे कुछ भिन्न नहीं होगी। ग़रीब घरों के युवा, आर्थिक कारणों से या तो आरक्षण के बावजूद दाख़िला नहीं ले पायेंगे, या फिर बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने को विवश होंगे। लाभ केवल पिछड़ी जाति के उन थोड़े से परिवारों को ही मिलेगा, जिनकी आर्थिक स्थिति धनी या खुशहाल मध्यम किसान की है या जो खेती से अर्जित मुनाफ़े के सहारे, पहले से ही शहरी मध्यवर्ग की कतारों में शामिल हो चुके हैं।

आरक्षण के समर्थक इन्हीं आँकड़ों के आधार पर कहेंगे कि इसीलिए आरक्षण को अभी लम्बे समय तक जारी रहना चाहिए और इसके दायरे को भी विस्तारित किया जाना चाहिए। लेकिन हमारा कहना यह है कि इस रफ़्तार से ही यदि आरक्षण का प्रभाव पड़ता रहा तब तो एक शताब्दी बाद भी स्थिति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं आयेगा। और इससे भी अहम बात यह है कि उदारीकरण-निजीकरण के इस "रोज़गारविहीन विकास" के दौर में जब सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियाँ लगातार कम होती जा रही हैं (और निजी क्षेत्र में भी कुल मिलाकर उत्पादन के विकास और सेवाक्षेत्र के विस्तार के अनुपात में रोज़गार के अवसर पहले के मुकाबले काफ़ी कम पैदा हो रहे हैं) तो ऐसी स्थिति में आरक्षित नौकरियों का प्रतिशत यदि कुछ बढ़ भी जाये तो आम दलित और पिछड़ों की जीवन स्थितियों में भला इससे क्या फ़र्क पड़ने वाला है? एक बटलोई भात पर यदि सौ खाने वाले हों और भात का कुछ हिस्सा कुछ प्रतिशत अधिक भूखों के लिए आरक्षित भी कर दिया जाये तो किसी भी भूखे की स्थिति में कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि भूखों की संख्या की तुलना में भात है ही बहुत कम! आज आरक्षण का प्रतिशत यदि बढ़ा भी दिया जाये और यह पूरी तरह से लागू भी हो जाये, तो भी आम दलितों और पिछड़ों की सामाजिक स्थिति में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हो सकता। पूँजीवादी विकास आबादी का अभूतपूर्व गति से ध्रुवीकरण कर रहा है और यह पूँजीवाद की विशेषता होती है कि जो पहले से ही वंचित और उत्पीड़ित होते हैं, उन्हीं को सर्वहारा-अर्द्धसर्वहारा की कतारों में सबसे पहले शामिल करता है। दासों-भूदासों और उजड़े काश्तकारों के बेटे ही सबसे पहले उद्योगों के सर्वहारा बनते हैं। भारत में भी दलितों के साथ और पिछड़ी जातियों के बहुलांश के साथ ऐसा ही हुआ। कालान्तर में इनके बीच से, सचेतन प्रयासों से, बुर्जुआ राज्यसत्ता ने एक अत्यन्त छोटी मध्यवर्गीय जमात भी पैदा की, जो मुखर और वाचाल है, जो जातिगत उत्पीड़न पर खूब बोलती है, लेकिन साथ ही आम दलित आबादी और आम पिछड़ों की आबादी से वह अपने को काट चुकी है, वह पराजित मन है, सापेक्षतः विशेषाधिकार-प्राप्त और सुविधाभोगी है तथा हर प्रकार के क्रान्तिकारी परिवर्तन की विरोधी और घनघोर सुधारवादी है। वह आम दलितों की नुमाइन्दगी का स्वांग भरते हुए अपनी सुविधाओं की पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षा की गारण्टी चाहती है और विकास के पूँजीवादी मॉडल की अन्ध समर्थक है। दलितों और पिछड़ी जातियों के बीच की यही मध्यवर्गीय जमात आरक्षण को समस्या

(पेज 36 पर जारी)

अमर शहीद भगवती चरण वोहरा

शहादत दिवस (28 मई) के अवसर पर

अपनी जान तक न्यौछावर करने वाले क्रान्तिकारियों की वीर गाथाओं से कौन परिचित नहीं होगा? लेकिन इस आन्दोलन के दूसरे सबसे बड़े रणनीतिकार एवं प्रबुद्ध सिद्धान्तकार, क्रान्तिकारी और दुर्गा भाभी के जीवन-साथी—अमर शहीद भगवती चरण वोहरा—को कितने लोग जानते है?

भगवती चरण वोहरा का जन्म 1903 में आगरा में हुआ था। बचपन में ही दुर्गा देवी (दुर्गा भाभी के नाम से प्रसिद्ध) से उनका विवाह हो गया। लेकिन पढ़ाई जारी रही। उनकी शिक्षा-दीक्षा भगत सिंह तथा सुखदेव के साथ ही लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज, लाहौर में हुई। 1921 में गाँधी जी के आह्वान पर पढ़ाई छोड़ असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। आन्दोलन वापस लिये जाने से हताश हो उन्होंने पढ़ाई शुरू की। इसी दौरान भगत सिंह, सुखदेव और भगवती चरण वोहरा क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये। इन तीनों क्रान्तिकारियों की समझ बढ़ाने में नेशनल कॉलेज के प्रोफेसर छबील दास और 'सर्वेण्ट ऑफ दि पीपल' सोसायटी की द्वारका दास लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन राजाराम का बहुत योगदान रहा।

आजीवन कारावास की सज़ा भुगत चुके क्रान्तिकारी साथी स्वर्गीय शिव वर्मा के शब्दों में, "वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक विज्ञान की गहरी पकड़ के मामले में भगतसिंह और वोहरा की बौद्धिक मेधा एक जैसी थी।" (संस्मृतियां)

यह बहुत कम लोग जानते हैं कि असेम्बली बम काण्ड में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त के द्वारा इंकलाब ज़िन्दाबाद-साम्राज्यवाद मुर्दाबाद का जो नारा लगाया गया था वह शहीद वोहरा द्वारा ही दिया गया था। जो कालान्तर में राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का प्रतीक नारा बन गया। और बाद में इंकलाब का जो अर्थ बताया गया उससे उनकी समझ और बौद्धिक प्रतिभा का कायल हुए बिना नहीं रहा जा सकता।

1926 में भगत सिंह ने 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की जिसके घोषणापत्र का मूल दस्तावेज वोहरा द्वारा तैयार किया गया। इसमें कांग्रेस की ढुलमुल नीति की जो आलोचना की गई और जितने ओजस्वी शब्दों में नौजवानों को भावी समाज निर्माण के लिए आगे आने की अपील की गई—आज भी पढ़कर रोमांच हो जाता है। नौजवानों के अन्दर इस घोषणा पत्र ने भगवती चरण वोहरा को प्रखर क्रान्तिकारी विचारक एवं कुशल प्रचारक के रूप में प्रसिद्धि दिला दी। यह गौरतलब है कि नौजवान भारत सभा के प्रचार मंत्री वोहरा ही थे।

इनके द्वारा तैयार दूसरा ऐतिहासिक सुप्रसिद्ध दस्तावेज़ 1929 में 'बम का दर्शन' के नाम से आया। वायसराय की ट्रेन पर बम हमले पर गाँधी द्वारा निन्दा किये जाने और यंग इण्डिया पत्र में

(पेज 27 पर जारी)

सबसे पहले बात रखते हुए इस ओर लोगों क्या ध्यान दिलाया कि शहीदों का सपना सिर्फ अंग्रेज़ों से मुक्ति नहीं था। इसके बाद **नौभास** के ही जयपुष्प ने आज़ादी के खोखलेपन की बात कही जिसमें ग़रीबों के लिए सिर्फ बेरोज़गार घूमने और भूखा मरने की आज़ादी है।

आह्वान कैम्पस टाइम्स की सम्पादक कविता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महिलाओं की मुक्ति का सवाल आम मेहनतकश जनता और निम्न मध्यम वर्ग की मुक्ति से जुड़ा हुआ है। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज के अध्यापक डा. रामेश्वर राय ने संस्कृति पर अपनी बात रखते हुए कहा कि हमें अपने अन्दर के पितृसत्तात्मक मूल्यों से भी लड़ना होगा। साथ ही डा. राय ने उपभोक्तावादी संस्कृति से संघर्ष की ज़रूरत पर भी बल दिया। इसके बाद **नौभास** के प्रसेन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि सपनों और इतिहास को भुलाकर कोई भी क़ौम तरक्की नहीं कर सकती। अन्त में **दिशा छात्र संगठन** के अभिनव ने विकल्प पर अपनी बात रखी। अभिनव ने कहा कि पूरे देश में आज क्रान्तिकारी जनसंगठनों का एक तानाबाना फैला देने की ज़रूरत है और उसे समन्वित करने वाली एक क्रान्तिकारी पार्टी बनाने की ज़रूरत है जो इलेक्शन नहीं बल्कि इंक़लाब के रास्ते देश में परिवर्तन करे।

कार्यक्रम की शुरुआत में दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की सांस्कृतिक टोली **विहान** दो गीत प्रस्तुत किये। पहला गीत था फैज़ अहमद फैज़ का *दरबारे वतन में जब एक दिन* और दूसरा गीत था *शहीदे के लिए*। श्रोताओं ने इन गीतों को काफी सराहा। कार्यक्रम का समापन इसी संकल्प के साथ हुआ कि हम शहीदों के सपनों को हकीकत में बदलकर रहेंगे।

नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में चल रहा जुझारू सड़क निर्माण आन्दोलन नये चरण में पहुँचा

पिछले 6 महीने से करावलनगर के मुकुन्द विहार में चल रहा सड़क निर्माण आन्दोलन अब एक नये चरण में पहुँच गया है। इस आन्दोलन की आंशिक जीत के रूप में कुछ गलियों का निर्माण कार्य शुरू हुआ है और जहाँ पहले से निर्माण कार्य चल रहा था वह तेज़ हुआ है। बाकी गलियों के लिए नौजवान भारत सभा के आह्वान पर मोहल्ले के बाशिंदे **नौभास** के दफ्तर के सामने इकट्ठा हुए। 9 अप्रैल को हुई इस बैठक में यह फैसला लिया गया कि सांसद सन्दीप दीक्षित ने जो वायदा किया था वह कोरा वायदा साबित हुआ है। विधायक बिष्ट और पार्षद जगदीश प्रधान द्वारा दिये गए आश्वासन भी झूठे साबित हो चुके हैं। **नौभास** के आशू ने प्रस्ताव रखा कि अब एक प्रतिनिधि मण्डल को सांसद सन्दीप दीक्षित से मिलकर उन्हें यह अल्टीमेटम देना चाहिए कि अगर एक महीने के अन्दर बाकी सड़कों का निर्माण कार्य नहीं शुरू होता तो मुकुन्द विहार के निवासी **नौभास** के नेतृत्व में धरने पर बैठेंगे।

इस प्रस्ताव को निवासियों की ओर से पूरा समर्थन प्राप्त हुआ। नतीजतन, 12 अप्रैल को **नौभास** का प्रतिनिधि मण्डल सन्दीप दीक्षित से मिलने पण्डारा मार्ग पर स्थित उनके घर गया। इस प्रतिनिधि मण्डल की ओर से योगेश और अभिनव ने सांसद से बात की। इनके सवालों का सन्दीप दीक्षित के पास कोई जवाब नहीं था। **नौभास** की चेतावनी के मद्देनज़र और चूँकि वहाँ भारी संख्या में लोग मौजूद थे, इसलिए सांसद दीक्षित को यह वायदा करना पड़ा कि **नौभास** के प्रतिनिधियों को हरिजन वेलफेयर बोर्ड के कार्यालय और यमुना पर विकास प्राधिकरण के कार्यालय में सभी फाइलों और कागज़ात को देखने की अनुमति दी जाएगी। और साथ ही उन्हें जन दबाव के कारण तत्काल कनिष्ठ अभियन्ता को फोन करके यह कहना पड़ा कि वह फौरन मुकुन्द विहार की सड़कों के निर्माण कार्य की प्रगति से उन्हें अवगत कराएँ और कार्य में आने वाली किसी भी बाधा को तत्काल दूर करें। **नौभास** के आशीष ने बताया कि अगर इन आश्वासनों के बाद भी समस्याओं का त्वरित समाधान नहीं होता तो जून के दूसरे सप्ताह में सांसद सन्दीप दीक्षित के घर के सामने एक दिन का धरना दिया जाएगा।

यह इस आन्दोलन को मिलने वाली एक बड़ी सफलता थी। इस आन्दोलन से यह बार-बार साबित हुआ है कि अगर आम जन एकजुट होकर संघर्ष करें तो निश्चित रूप से उन्हें ऐसे मसलों पर सफलता मिल सकती है।

अमर शहीद भगवती चरण वोहरा

(पेज 7 से जारी)

क्रान्तिकारियों पर 'बम की पूजा' का आरोप लगाए जाने के आरोप में यह पर्चा लिखा गया था। इसमें गाँधी के प्रचारात्मक आक्रमण का जवाब देने के साथ ही अहिंसा की एक सुसंगत व्याख्या करते हुए क्रान्तिकारियों के असली उद्देश्य एवं भावी समाज की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई थी।

यहाँ यह जानकारी देना उचित होगा कि केन्द्रीय कमेटी की सहमति न मिलने पर वायसराय पर बम हमले की पूरी योजना और क्रियान्वयन भगवती चरण वोहरा द्वारा ही संचालित किया गया। वायसराय और गाँधी की वार्ता को वोहरा ने एक साम्राज्यवादी के साथ पूँजीपतियों के प्रतिनिधि की बातचीत की संज्ञा दी।

28 मार्च 1930 में भगत सिंह को छुड़ाने के लिए बम परीक्षण की एक हृदय विदारक दुर्घटना में रावी के तट पर क्रान्ति का यह प्रखर विचारक और उत्कट योद्धा बलिदान हो गया। शरीर के परखच्चे उड़ गये लेकिन अन्तिम साँस तक वह साथियों को ढाढ़स बँधाते रहे। कहीं अंग्रेज़ों को भनक न लग जाये, इसलिए उन्हें मृत्युपरान्त वहीं रावी तट पर दफ्न कर दिया गया। यहाँ तक कि उनकी पत्नी दुर्गा भाभी भी उनसे नहीं मिल पाईं। क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतना बड़ा नेता धरती की गोद में हमेशा के लिए सो गया। जिस देश और जनता के लिए उस वीर ने अपने प्राण न्यौछावर किये उनको इतनी बड़ी घटना की ख़बर तक नहीं मिली। न कोई शोक सभा, न जनाज़ा न विदाई धुन!

इसी अमर शहीद की 77वीं शहादत तिथि पर उसी तरह का सन्नाटा दिल में एक कसक पैदा करता है। तब अंग्रेज़ों का डर था लेकिन आज किसका डर है? चन्द नौजवानों को छोड़कर इन शहीदों का नाम लेने वाला नज़र नहीं आता जबकि उन्हीं कुर्बानियों की बदौलत मिली आज़ादी भोगने वाले बहुतेरे हैं। तब सोचना पड़ेगा कि क्या क्रान्तिकारियों का इंकलाबी सपना पूरा हुआ? आज यह सवाल हमारी आँखों झाँक रहा है।